तुलसी प्रज्ञा २००१ ०७ (फोल्डर नं. ०२४५३९)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

नये वर्ष पर विश्व के नाम संदेश – आचार्य महाप्रज्ञ ---------- १

अनेकान्त की सार्थक प्रस्तुति – मुमुक्षु शान्ता जैन ---------- ५

अनेकान्तवाद – आचार्य महाप्रज्ञ ----------८

भारतीय दार्शनिक चिन्तन में अनेकांत – प्रो. सागरमल जैन ---------- १५

क्या वेदान्त को अनेकान्त किसी अंश में स्वीकार्य हो सकता है ? – डॉ. दयानन्द भार्गव --------- ३२

अनेकान्तवाद – एक विवेचन – प्रो. तुषार कान्ति सरकार ---------- ३७

भगवान महावीर और अनेकान्तवाद – डॉ. अशोककुमार जैन ---------- ३९

अनेकान्तवाद और उसके प्रयोग – मोहनसिंह भण्डारी ---------- ४८

पारिवारिक शान्ति और अनेकान्त – डॉ. बच्छराज दूगड ---------- ५६

महावीर का अनेकान्त – सामाजिक विमर्श – शुभू पटवा ---------- ६५

वैचारिक सहिष्णुता का सिद्धान्त – अनेकान्त – डॉ. सुदीप जैन ---------- ७१

वर्तमान समस्याओं के समाधान में अनेकान्त की उपयोगिता – डॉ. हेमलता बोलिया ---------- ७७

शान्त – सहवास में अनेकान्त की भूमिका – साध्वी आरोग्यश्री ---------- ८३

अनेकान्त का सामाजिक पक्ष – श्रीमती रंजना जैन ---------- ८८

अनेकान्त की प्रासंगिकता – सिद्धेश्वर भट्ट ---------- ९३

लोकार्पण – आवश्यक निर्युक्ति (भाग – १) का---------- १०२

Fatless Cream and Decaffeinated Coffee – Sudhamahi Regunathan---------- 103

Anekanta – A Jaina Contribution to Scholastic Methodology – M.R. Gelra---------- 113

Anekanta Metaphysico Spiritual Perspective – Prof. Kamal Chand Sogani ---------- 119

Anekantavada and its statement in Saptabhanginaya – Arun K. Mukherjee ---------- 128

Uniqueness of Anekantavada - H.R. Dasegowda---------- 135

The Applied Aspect of Anekanta Philosophy – DR. Nemi Chand Jain ---------- 138

Anekantvada – Objections raised by Prof. N.K. Devaraja and answers given by Acharya Shri Mahaprajna – Dr. Pradyumna Shah---------- 148

Anekanta – its Relevance to the Modern Times – Dr. Anil Dhar---------- 153

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org